Dictation 26.

A friendly encounter.

चौधरी - क्यों, श्याम बाबू, हमारे शहर में आपका मन लग गया?
श्याम - अरे! नमस्कार चौधरी साहब। जी, इधर मन त□लग गया, परन्तु ठण्ड की वजह से गला भी बैठ गया। अजीब जगह है।
चौधरी - लगता है आपक□ठण्ड लग गई। हाँ, इस बार बारिश कुछ ज़्यादा ह□रही है। आमतौर पर यहाँ पर इतनी बारिश नहीं ह□ती। आपका ल□गों से मिलना-जुलना त□ह□ता है? आप ढाबे पर त□नहीं□आते।
श्याम - लिखने से फ़ुरसत ज□नहीं□मिलती। □ र जिस दिन आप मिले, उसी दिन मुझे घुटने पर च□ट लगी थी। उसके बाद जिन ल□गों ने मुझे बुलाया, उन सब क□मेरे च□ट के बारे में सुनना पड़ा।
चौधरी - ओ! त□इसीलिए आप उस दिन इतने दुखी लग रहे थे। कभी काम में दिल नहीं□लगा त□घर आइए। वहाँ ज□बड़ी लाल इमारत देख रहे है, वही हमारा घर है। घर का नाम 'श्रीधाम' है, लेकिन 'लाल बङ्गला' भी कहलाता है। हमारे यहाँ काफ़ी खाना-खिलाना ह□ता है। आइए कभी।
श्याम - बहुत शुक्रिया चौधरी साहब। अच्छा, ज□साहब उस दिन आपके साथ बाज़ार में थे, वे आपके क□ई लगते हैं क्या?
चौधरी - जी नहीं□वह मेरे द□स्त के बेटा है। नवम्बर में उसकी देहरादून में शादी हुई थी। चार ही महीने हुए थे, जब उसकी पत्नी बीमार पड़ी, और मर गई।
श्याम - अरे! यह त□बहुत बुरा हुआ।
चौधरी - देखिए न। बच्चे की किस्मत ख़राब है। इधर परिवारवालों से मिलने आया था, मैंने कहा कि कुछ दिन हमारे यहाँ ठहर जा।
श्याम - बहुत अच्छा किया। पर बेचारे का मन नहीं□लगता ह□गा यहाँ पर।
चौधरी - स□त□है। उसके लिए बड़ा बुरा लगता है, श्याम बाबू।

***

Chaudhari: Why, Shyam babu, are you now feeling at home in our town?
Shyam: Oh! Namaskar Chaudhari sahib. Yes, I have begun to feel at home, but I am hoarse on account of the cold. This is a strange place.
Chaudhari: It appears that you have caught a cold. Yes, this time it's raining a bit too much. Usually it doesn't rain as much here. You get to meet people [I expect]? [I know that] you don't come to the eatery.
Shyam: I get no time off from writing. Then, on the day that I met you, I had hurt my knee. After that everyone who called me had to hear about my wound.

Chaudhari: Oh! So that is why you seemed so unhappy that day. If sometime you don't 'have your heart in work', drop by at [our] home. The red building that you see there is our house. The house is called 'Sridham', but it is also called 'The Red Bungalow'. There is much feasting ('eating and feeding') at our house. Come sometime.
Shyam: Many thanks, Chaudhari sahib. Tell me, the gentleman who was with you the other day in the bazaar – is he a relative of yours?
Chaudhari: No, he is the son of my friend. In November, he got married in Dehradun. It had only been four months when his wife fell sick, and died.
Shyam: Oh! What a terrible thing.
Chaudhari: Just imagine ('look, won't you?'). The child is ill-fated. He had come to visit family here (nearby, in Dehradun); I said [to him], stay with us here for a few days.
Shyam: You did very well. But the poor fellow wouldn't be feeling too good ('at home') here.
Chaudhari: That is so. I feel very bad for him, Shyam babu.